प्रश्न 1. नीतिशतकम् काव्य के करणीय और अकरणीय शिक्षा पर प्रकाश डालें।

उत्तर– भर्तृहरि संस्कृत गीति-काव्य के अत्यन्त प्रसिद्ध मुक्तक काव्यकार है। उनके तीन प्रसिद्ध मुक्तक काव्य है—नीतिशतक, श्रृंगारशतक और वैराग्यशतक।

नीतिशतक में जीवन को सुखी बनाने के लिए करणीय और अकरणीय बातों पर प्रकाश डाला गया है। इस शतक के प्रतिपद्य को इन वर्गों में बाँटा जा सकता है— (i) मूर्ख पद्धति, (ii) विद्धत्पद्धति, (iii) मानशौर्य पद्धति, (iv) अर्थ पद्धति, (v) परोपकार पद्धति, (vi) दैव पद्धति, (vii) कर्म पद्धति।

नीतिशतक में मुक्तकाव्य के सभी लक्षण मिलते हैं। इसमें प्रत्येक पद्य अपने आप में पूर्ण और स्वतंत्र हैं। उसके भाव को समझने के लिए आगे-पीछे के पद्यों को देखने की आवश्यकता नहीं है। रस की पूर्ण सामग्री पद्य में विद्यमान है। कहीं एक ही पद्य में एकाधिक उदाहरण देकर उद्देश्य को स्पष्ट किया गया है, कहीं एक ही पद्य में एकाधिक अर्थों को समेटने का सफल प्रयास किया गया है। कहीं एक ही पद्य में सत्सङ्गति, धन आदि के गुणों-अवगुणों की चर्चा की गयी है। सूक्तियों का तो यह कोष है। जैसे—विभूषणं मौनम् अपण्डितानाम्। सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति।

प्रश्न 2. मूर्ख की मूर्खता का प्रतिकार असक्य है कैसे?

उत्तर– आग पानी से शान्त की जा सकती है, सूर्य की धूप छाते से रोकी जा सकती है, मतवाला हाथी तीखे अंकुश द्वारा वश में किया जा सकता है, गौ एवं गधे डण्डे से ठीक किये जा सकते हैं, रोग दवाओं से दूर किया जा सकता है और विष अनेक प्रकार के मन्त्रों से उतारा जा सकता है। इस प्रकार सब की दवा शास्त्रों में विहित है, किन्तु मूर्ख मनुष्य के लिए कोई दवा नहीं है। अतः मूर्ख की मूर्खता का प्रतिकार अशक्य है।

प्रश्न 3. साहित्य, संगीत और कर्ण विहिन मनुष्य साक्षात् पशु है। साक्ष्य के साथ प्रमाणित करें।

उत्तर– साहित्य, सङ्गीत और कला से अपरिचित व्यक्ति बिना सींग एवं पूँछ का साक्षात् पशु है। वह घास न खाकर भी जो जीवित रहता है, यह प्राकृत पशुओं के लिए बड़े सौभाग्य की बात है। यदि वे घास खाते तो वास्तविक पशुओं का जीवन दुरूह हो जाता। अतः नर-पशुओं का घास न खाना, प्राकृत पशुओं का बड़ा ही सौभाग्य है।

प्रश्न 4. विद्यादि का संग्रह क्यों अत्यावश्यक है?

उत्तर– जिन मनुष्यों में न तो विद्या ही है, न तप, दान, ज्ञान, शील, गुण एवं धर्म ही है, वे इस भूलोक में पृथ्वी के भारस्वरूप पशु ही हैं, जो मनुष्य के रूप में विचरते रहते हैं। अर्थात् मानव-जन्म पाकर भी जिसने न तो विद्याध्ययन किया, न तपश्चरण किया, न सत्पात्र को दान ही दिया, न ज्ञान का ही उपार्जन किया, न सदाचार का पालन किया, न धैर्य, साहस, दया, दाक्षिण्य आदि गुणों का ही अर्जन किया और न यहाँ वैयक्तिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक कर्तव्यरूप धर्म का ही अनुष्ठान किया, वे इस विश्व में केवल आकृतिमात्र से मनुष्य कहलाते हैं, वास्तविक रूप से तो वे पशु ही हैं। उनका जीना व्यर्थ एवं निरर्थक है। अतः विद्यादि का सङ्ग्रह अत्यावश्यक हैं।

प्रश्न 5. मूर्ख और मूर्ख की संगति को निरूपित करें।

उत्तर– मूर्खसंगति की निन्दा करते हुए कवि कहता है—दुर्गम पहाड़ों पर जङ्गली पशुओं के साथ विचरण अच्छा है, किन्तु दिव्य इन्द्रभवन में भी मूर्खों का सङ्ग अच्छा नहीं, क्योंकि उनसे सर्वदा अनिष्ट की ही आशंका बनी रहती है।

शास्त्रों के द्वारा विभूषित, शब्दों से सुन्दर वाणी बोलने वाले और शिक्षा के द्वारा शिष्यों को सदुपदेश देने वाले, प्रसिद्ध कवि जिस राजा के राज्य में गरीब होकर रहते हैं, उस राजा की ही जड़ता सूचित होती है। कवि लोग तो धन के बिना भी समादरणीय है, क्योंकि बुरा पारखी, जौहरी ही निन्दा का पात्र होता है, जिसने रत्नों को मूल्य से गिरा दिया। अर्थात् उसका समुचित मूल्य न आँक सका। अतः जिस राजा के राज्य में कवियों का आदर नहीं, उसी का दुर्भाग्य है।

प्रश्न 6. विद्वानों के संदर्भ में कवि का क्या कहना है?

उत्तर– विद्वानों की प्रशंसा करता हुआ कवि कहता है—जो विद्यारूपी धन चोरों को दृष्टिगत नहीं होता और अवर्णनीय कल्याणपरम्परा की पुष्टि करता है, याचकों को सदा दिये जाने पर बढ़ता है तथा जो कभी नष्ट नहीं होता, ऐसा विद्यारूपी गुप्त धन जिसके पास है, उन विद्वानों का सदा सम्मान करना चाहिए। अरे राजाओं! उनके प्रति अभिमान करना छोड़ दो, भला उनकी बराबरी कौन कर सकता है? राजा और विद्वान् में महान् अन्तर है।

हे राजन्! तत्त्वज्ञान प्राप्त किए हुए विद्वानों का अनादर मत करो। तुच्छ तिनके के समान लक्ष्मी उनको उसी प्रकार बाँध नहीं सकती, जैसे अतिसूक्ष्म कमलनाल के सूत से मदोन्मत्त हस्ती नहीं बाँधा जा सकता।

प्रश्न 7. वाणीरूपी भूषण ही सदा स्थायी भूषण है। कैसे? दृष्टान्त के साथ निरूपित करें।

उत्तर– विधाता हंस पर क्रुद्ध होकर केवल उसके कमलवन में विचरण करने के सुख को नष्ट कर सकता है, किन्तु वह उसके दूध और पानी को पृथक् कर देने वाली प्रख्यात् कला को नहीं मिटा सकता है। अतः किसी के स्वाभाविक गुणों को किसी प्रकार की क्षति नहीं करनी चाहिए।

न तो केयूर, न चन्द्र के समान उज्ज्वल हार, न स्नान, न चन्दनादि का लेपन, न फूल, न सँवारे हुए केशपाश ही मनुष्य को अलंकृत करते हैं, किन्तु वह एक वाणी, जो परिष्कृत रूप से प्रयोग की जाती है, वही मनुष्य को भली-भाँति सजाती है, क्योंकि अन्य सब गहने नष्ट हो जाते हैं, पर वाणीरूप भूषण ही सदा स्थायी भूषण है।

विद्या ही मनुष्य का सबसे श्रेष्ठ रूप है। छिपा हुआ सुरक्षित धन है। विद्या भोगविलास देनेवाली है तथा यश एवं सुख देने वाली है। विद्या गुरुओं का भी गुरु है। परदेश में विद्या ही बन्धुजन है, विद्या सबसे उत्कृष्ट देवता है। राजाओं के मध्य में विद्या ही पूजी जाती है, धन नहीं। इसलिए विद्या से हीन मनुष्य पशु ही है।

प्रश्न 8. नीतिशतकम् काव्य के रचयिता कौन है?

उत्तर– नीतिशतकम् के रचयिता भतृहरि हैं।

प्रश्न 9. विद्वानों की पूजा क्यों की जाती है?

उत्तर– जो विद्यारूपी धन चोरों को दृष्टिगत नहीं होता और अवर्णनीय कल्याण परम्परा की पुष्टि करता है, याचकों को सदा दिये जाने पर बढ़ता है तथा जो कभी नष्ट नहीं होता ऐसा विद्यारूपी गुप्त धन जिसके पास है, उन विद्वानों की सदा पूजा एवं सम्मान करनी चाहिए।

—0—